B/H 48

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जोशेजुनू उर्फ़ गुलेनार

[नाटक.]



प्रो० उपेन्द्रनाथ राहीकर.

B/H 98

Gulmar

Deauduty and

bind.


CALCUTTA

Joshe Junuu Urfa Gulenaar
by Bhatta Upendra Sharmaa
'Raahiikar'

First ed 1991 Vikram Samvat

जोशे जुनू उर्फ़ गुलेनार

[नाटक]



लेखक व प्रकाशक—

पो० भट्ट उपेन्द्र शर्मा राहीकर

कांकरोली (मेवाड)

दीपोत्सव १९९१ वै०

प्रति १००० }   { मूल्य

मुद्रक:—
परशुराम सेवाराम एण्ड कं०
प्रोप्राईटर—
श्री महेश प्रिन्टिङ्ग प्रेस
नाथद्वारा (मेवाड)



पता:—
पो० भट्ट उपेन्द्र शर्मा राहीकर
कांकरोली (मेवाड).



नाजरीन—



स परवर दिगारके करिश्मों का हजार शुक्र है कि जिसने इन नाचीज खाक के पुतलों में क्या २ नायाब करिश्में बख्शे हैं उसी के नूरे-नजर आजएक नयाबो अपनी शानो शौकत का निराला नाटक शौकीनोंके दिल खुशकरने को लिख कर पेश किया जाता है, इस नाटक में सिर्फ तीन बिनायेहस्तीहैं (अव्वल)हस्तियेजुनूं कहांतक संगदिली मक्कारी जल्लादी करजाताहै(दोयम)अस्मत लब्जका हरूफ व हरूफ पूरा२ वो साथ२ दामने असमत क्याशहहै दिखलाया गया है(सोयम)औरतखुदमुख्तार रहनेपर कहांतक जनूनो वहशी होजातीहै लिहाजा दस्तबदस्ता इल्तमासहैकि नाजरीन वगैर इस नाटक को पढकर इस खाकसार को ममनून फरमायें, चूंकि ये नाटक मेरे लिखनेका कलम अव्वलहीहै इसी बाइस इसमें बहुतसी गलतियां जहूर में आयेगी मगर उसपर खयाल न फरमा मुझे इस अखाडे का जदीद पट्ठा होनेके बायस माफ करेंगे बादहु पहलवानी करिश्मों के हथखंडे मालूम होजानेपर तो ये पट्ठा नायाब करिश्मे पेशेनजर करेगा उम्मीद हैकि इस जदीद किताब नवीस को गलतियों से आगाह वो मदद शायकीन फरमावेंगे तो आयंदा बहुत ही नायाब खुशनुमा नजारा पेश किया जावेगा।

--लेखक।

पात्र !

मर्द !

(१) बादशाह (हिंदुस्तान का हिन्दू बादशाह)
(२) शाहजादा (बादशाह का इकलौता लड़का)
(३) वजीर दो वजीर यानी (१) हिंदका (२) बसेरका)
(४) सिपहसालार (दो (१) फौजहिंदका) (२) फौजबसरेका)
(५) परिंद (शाहजादे का दोस्त मसखरा)
(६) डाकू (राहजनी करनेवाले)
(७) सिपाही (अरदली छडीदार)
(८) थानेदार (शहर कोतवाल)
(९) फौज (सिपाही हवालदार सुबेदार) वगैरह

स्त्री

(१) चन्द्रकला (शाहजादा हिंदकी आधी ब्याही स्त्री)
(२) गुलेनार (बसरेकी राजकुमारी सल्तनतकी विधाता)
(३) मोहिनी (गुलेनार की छोटी बहन निस्फ हकदार)
(४) तारा (मोहिनी की प्राण प्यारी सहेली)
(५) सहेली (५ दीगर साथिन)
(६) परियां (रामिगरां)
(७) गुलचमन (अपटूडेट फेशनेबल लेडी)



अंक १ ला

(परदा पहिला)

(सीन शाही महल का बाहरी हिस्सा)

(दो परियों का दोनों तरफ से नाचते गाते हुए आना)

—गाना—

ए मालिक ए साहिक तेरे सरजो सब संसार ।
तू गफ्फार तू जब्बार तू ही जग का पालनहार ॥ ए ॥
परवरदिगार गमगुसार अय दातार निसदिन पलछिन,
तेरी नजर निगार ।
कोई कहे रहीम कोई कहे करीम हरदम तेरी,
महरे नजर फुहार ॥ ए ॥
सर ताज महाराज तेरी रहमत से हम रहते हैं गुलजार।
घडि घडि पल पल छिन छिन निसदिन हरदम
शुकरगुजार ॥ ए ॥

(शाहजादी गुलेनारका छोटीबहिन मोहनी व सहेली तारा के साथ आना. गुलेनार का खुद तख्तनशीं होना, परियोंका गाते रहना और गाते गाते चलेजाना)

(गुलेनार) क्यों मोहनी तुम मुझसे रञ्ज क्यों रहती हो! क्या तुम्हें मेरी कारवाइयें पसंद नहीं है?

(मोहिनी) आहा! आपने बहुतही अच्छा खयाल फरमाया, क्योंकि बवजह सुहबते असर चंद हरकों आपकी शाम ग़ैर शाही वो वालदैन मरहूमा के नेकनामो में धब्बा लगा रहीं हैं लिहाजा इस पर गौर फरमाना अम्रजरूरी है उम्मीद है मेरी तकरीर आप बखूबी समझ गई होंगी।

(गुलेनार) मोहिनी, क्या आज तू नशे में है?

(मोहिनी) क्यों क्या तकरीर में कोई कलाम झूठा है? देखिये मैं और आप खून के एक ही कतरे के दो नूर हैं और वालदैन के सल्तनत के दोनों ही हकदार हैं मगर कई दफाके कहने पर भी हिस्सा तकसीम में हीले हा हो रहे हैं तकसीम क्यों नहीं किया जाता?

(गुलेनार) अगर मेरी राह और कहना मानेगी तो हिस्सा पायेगी।

(मोहिनी) ऐसी बातों से तू पछतायेगी।

(गुलेनार) छोटामूं ये दिमाग।

(मोहिनी) क्या हिस्सा छोडूं बेलाग।

(गुले०) तू मगरूर है।

(मोहि०) ऐसा बकना फजूल है।

(गुले०) मैं तुझसे बड़ी हूँ।

(मोहि०) सिर्फ उम्र के लिहाज से।

(गुले०) मोहनी जबान रोक।

(मोहि०) क्यों जबान तो बोलने के लिये ही है।

(गुले०) मुझे मेरी हक्सि अजीज है।

(मोहिनी) मगर इज्जत शाही भी तो कोई चीज है।

(गुले०) तू पागल दीवानी है।

(मोहि०) तू बदी की निशानी है।

(गुले०) अभी जवानी की बहार है।

(मोहि०) आज आ येकार स्याह कारहे।
(गुले०) मोहिनी अपनी जबां को ताला दे।
मोहि०) तूभी जिस्मानी शौक काबूमें ले।
(गुले०) तू अपने लिये कांटा बोरही है।
(मोहि०) कद्दानो तेरे कारों पर रो रहो हूं।
(गुले०) मेरे सामने एसी ढिटाई
(मोहि०) इसकदर बेईमानी और ठगाई
(गुले०) देख पछतायेगी
(मोहि०) जैसा करेगा वैसा पायेगी
(गुले०) इस तरह बात करने वाले की सजा क्या है जानतीहै
(मोहि०) हां अच्छी तरह जानती हूं कत्ल या खून
(गुले०) तो अच्छी तरह सोचले
(मोहि०) सोचलिया बन्दी एसी गीदड़ भभकियों से डर-
ने वाली नहीं है
(शेर) बद का बदला बद और नेक का बदला नेक है।
खुदा ले यान् ले ले जान सिर्फ एक है॥
(गुले०) बस होचुका हटजा मेरे सामने से।
(मोहि०) ले जातीहूं जो दिल में हो कर गुजर।
[गुलेनार तख्त से नीचे गुस्से में बकती हुई आती है]
(गुले०) आह गजब-गुस्ताखी की भोहद हुआ करती है मेरे सामने इस कदर गुस्ताखाना जवाब-खैर-मगर सोचती हूं तो यह आस्तीं का सांप है अब बरदाश्त नहीं होसकता बस ! मुंह बन्द करना ही होगा-वो है सिर्फ खून।
(तारा) हाय २ बानू किसकी शामत आई जो उसके खून की बारी आई।
(गुले०) (खुदसे) (मेरीबात इसने सुनली ? खैर) तारा क्या तू अभीतक यहीं है।

(तारा) हां बानू लेकिन आपने खूनका फरमाया यह फिकरा समझ में न आया।

(गुले०) तारा चंद्बागियों ने बगावत की है, उसीकी सजा (जाती है जाते २ ठहर मोहिनी के साथ तेरा भी खातमा करना होगा।)

(तारा) अफसोस ! दुनिया कितनी खुदगर्ज सौदाई है। बहनों बहनों में कज अदाई है गुलेनार जोशेजुनू में दीवाना साथ २ संग दिल है। और मोहिनी सांधी और रहम दिल है वो इसे नेकीकी राह बतलाती है और यह उस बेचारी के खून की प्यासी है। इस वक्त मुझे भी नेकी का साथ देना जरूरी है मोहिनी को गुलेनार से खबरदार रखना जरूरीहै (जाती है)

[परदा १ला खतम]



अंक १ ला

परदा २ रा

(सीन मोहिनी का महल)

(मोहिनी का सहेलियों के साथ आना सहेलियों का गाना)

गाना– आसमां का चांद ये परदे जमीं पर आगया,
आलम में शोहरा हुस्न है लाखों के दिलपर भागया ॥
देखने वालों का मजमा दर पे तेरे है हजूम,
मुर्दों को ज़िंदा कर दिया बिसमिल भी चंगा होगया
अय खुदाई बज्म तू अब तो बुतों पर रहम कर,
नक्शे खुदा जो दिलमें था आंखों में भी समागया ॥
तेरी सूरत पे सदके जाते हैं परियां वो हूर,
उस मुसब्बिर का जमीं पर यकता नमूना आगया ॥

(मोहिनी) तारा आज तू किस ख्याल में किस हाल में है।

(तारा) बानू न पूछो न पूछो जनून हो गया अरमानों का खून हो गया।

(मोहिनी) खैर तो है! क्या बवाल आया या कोई खौफनाक ख्वाब आया।

(तारा) नहीं प्यारी नहीं तराना ख्वाब नहीं जोशेजुनू में एक मासूम की कुरबानी है। अजीज़ों की बदगुमानी है। इसी से परेशानी है।

(मोहिनी) क्यों बक रही है दीवानी होरही है क्या जिन सवार है क्या हाल है?

(तारा) बाबू होशियार होजाइये चर्ख़ का चक्कर आपको निगलनेके लिए शैतानकी तरह मुंह फैलाये आरहा है सम्हल जाइये।

(मोहि०) आज तुझे क्या होगया होश फ़रामोश है कुछ समझ में नहीं आता साफ़ बयान कर इतनी क्यों बेहोश है

(तारा) गुलेनार पर जुनू का जोश है बजाय देने हिस्से के तेरे खून कर देनेका रोप है।

(मोहि०) मैं नहीं समझता कि तेरे दिल में क्यों मलाल आया क्या बहन बहन का खून!

(तारा) चुप कोई आता है। (ठहर कर) नहीं मेरा ख़याल गलत है - और सुनिये किसी तरह जान बचाना चाहिये जुल्म से रिहाई पाना चाहिये।

(मोहि०) क्या सच कहता है तारा तो फिर है कोई बचने का चारा. क्या करना चाहिये, कहां जाना चाहिये, मगर मेरा कुसूर क्या है?

(तारा) अजी बहुत ही बड़ा कुसूर है क्योंकि आप निस्फ़ हिस्सेदार हैं।

(मोहि०) बस इतना ही - तो ले मैं जाकर हिस्से से तलाक़ दे आता हूं।

(तारा) लेकिन दूसरा भी इस के साथ साथ जोड़ा है - उनकी ख़्वाहिशों की दुनियां में तू एक रोड़ा है।

(मोहि०) अगर ऐसा है तो मैं भी नहीं डरती!

मुझे राहे रास्त पर गर जान से भी जाना पड़े,
एक की तो बात क्या लाखों भी उस पर हेच हैं

(तारा) नहीं प्यारी वक्त नाज़ुक है जान बचाना ज़रूरी है; इन्तक़ाम लेने को ज़रूरत पूरी है।

(मोहि०) अच्छा तो बतला उस का रास्ता।

(तारा) बस छोड़दे उस से वास्ता।

(मोहि०) ऐसा होना मुमकिन नहीं बहनसे दुश्मनी, हरगिज नहीं।

(तारा) मोहिनी तू नादान है-तुझे होश नहीं जवानी का जोश नहीं।

(मोहि०) नहीं मुझे ऐसे जोशों से नफरत है-।

(तारा) मेरा कहना मान वरना पछतायेगी हाथ मलते रह जायगी।

(मोहि०) परवाह नहीं जो तकदीर में होगा सामने आयगा।

(तारा) अच्छा मैंभी तेरे साथ हूँ क़िस्मतका चक्कर भी देखेंगे।

किस तरह फिरता है चक्कर तकदीर का भी देखलो।
ब्यूटिफुल फ़ेसों में कितनी कज़ अदाई है देख लो॥

(मोहि०) जो कुछ होगा देखा जायगा।

(तारा) अच्छा चलिये वक्त होगया।

(मोहि०) बेशक-चलो दस बजगया। (जाती हैं)

(परदा २ रा खत्म)

(अंक १)

[परदा ३ रा]

स्थान (गुलेनार का कमरा)

(गुलेनार का गुस्से में बैठे हुये नज़र आना)

(गुले०) कौन है बाहर (सिपाही का आना)

(सिपा०) हुक्म सरकार

(गुले०) सिपहसालार जुल्मी बेग को बुला लाओ

(सिपा०) जो हुक्म (जाना है जुल्मीबेग का आना)

(जुल्मी०) इकबाले बुलंद क्या हुज़ूर ने याद फ़रमाया

(गुले०) हां कार ज़रूरी है और तुम्हारी मददकी दरकार पूरी है क्या तुम मदद दोगे दगा तो न करोगे।

(जुल्मी०) बन्दा हर तरह हाज़िर है फरमाइये क्या इरशाद है

(गुले०) मुझे यक़ीन दिलाना होगा कि दगा न होगा

(जुल्मी०) तावेदार दगा न करेगा परदा फ़ाश न होने देगा बंदा इस तेग की क़सम खाता है यक़ीन दिलाता है

(गुले०) बस यक़ीन होगया मलाल जो था धोगया -अच्छा देखो एक काम निहायत पोशीदह और जोखिम का है। अगर ज़राभी ज़ाहिर हुआतो सारा खेल ही बिगड जायगा।

(जुल्मी०) फरमाइये २ ऐसी क्या साजिश है जिसकी इस कदर अंदेशा है

(गुले०) हां तुमने एक मरतबा ज़िक्र किया था क्या वाकई तुम मुझे चाहते हो प्यार करते हो ?

(जुल्मी०) हाय इसका जवाब देने की ज़ुबां में ताकत नहीं है दिल से पूछ लीजिये

(गुले०) बेशक मैं जानती हूँ-मगर चंद ठोकरें जो इस में बहुतही ज़बरदस्त हैं पेश्तर उनकी सफ़ाई दरकार है

(जुल्मी०) बतलाइये वो कौनसा मौतका निवाला है जो करता है राहज़नी

(गुले०) बस तुम खूबही समझे-ऐसा सिर्फ़ एक ही है और वह है मर्दानी

(जुल्मी०) या परवर दिगार क्या भोली सूरतों मेंभी आमाल भरे रहते हैं

(गुले०) बस तुम यहींपर भूलते हो तमाम सूरतें जो नजर आतीं हैं एकसां नहीं होतीं। अक्लमंद वही हैं जो

(शेर) दिलको पहचान लेते हैं क़याफ़ा देखकर
खतका मज़मूं भांपलेते हैं लिफ़ाफ़ादेखकर

(जुल्मी०) नहीं २ जो सार है सार होनहीं सकता
जो फूल है वो खार हो नहीं सकता

(गुले०) (खुदसे) अगर ये तो फिसला जाता है काबू से बाहर जाता है (सिपह० से) अजी नहीं कांटा तो सले का भी अच्छा नहीं

(जुल्मी०) और ख्याल से बजाय कत्ल कुछ दूसरी ही सज़ा दीजातीतो बहतर था

(गुले०) नहीं २ सांपको खिलाना सहल.-मगर उसको मु-
शकिल है-अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो ये
काम तुम्हें करना ही होगा

(जुल्मी०) खैर तुम्हारे खातिर ये भी सही

(गुले०) तो बस चलो काम पूरा करो देखो सूरत देखकर
रहम न आजाये

(जुल्मी०) नहीं—जो मर्द हैं वो कौल से कभी नहीं फिरते
जो करना है वह कर गुजरते हैं मरते २

(गुले०) बस तो जाओ खुदा हाफिज-(दोनों जाते हैं)

[परदा ३रा खत्म]

अंक १ ला

परदा ४ था

(सीन–मकान सिपहसालार)

(सिपहसालार का अफसोस करना)

(जुल्मी) या खुदा क्या ऐसे खूब सूरत नाज़नियों के दिल भी पत्थर होते हैं? अपनी हिर्स में क्या क्या खौफनाक काम कर गुज़रते हैं के खुदा की पनाह– जोशे जुनू में – भाई २ बेटा बाप बहन २ यहांतक कि मा खुद बेटे की दुशमन हो जाती है। क्यों? इसलिये महज इसीलिये कि जिन्दगी साथ आराम के बसर हो बस। मगर अगर सोचा जाय तो आज कल के ज़माने में इन्सान की उम्र ज्यादा से ज्यादा सौ बरस है अगर इनमें से रातों को निकाल लीजावें तो पचास ही रहे इनमें २५ बरस बिमारी के गये तो २५ ही रहे, इनमें भी १२ बरस लड़कपन खेल-कूद के निकाल दो तो सिर्फ १३ ही रहते हैं। इन चंद दिनों के लिये इन्सान जोश में आकर कितने बड़े २ पाप कर डालता है कि बस खुदा ही खैर करे। खैर जी ये तो हुई जोश की बात। अब हम गुलामों का क्या फर्ज है बस यहीकि हुक्म कैसा भी हो आंखे बंद कर के तामील करना। इस

पेट पापी पर खुदा की मार बुरा भला कुछ भी सोचने नहीं देता एक तामाल हुक्म ही नजर आता है क्या करें गुलामी जो ठहरी —

नौकरी ले इके थी औकात अपनी,

जो जरिया पेट का था वो होगई जान अपनी।

अगर धर्मी ने अपने दोनों हाथ जोड़ लोहे का ज़ुबान से पूरे बारह बजा खामोश होगई। इसी तरह बेचारी माहिनी बाग होतेही चन्द सांसे लेते हुये हमेशा के लिये सोजायगी। [जोरसे आवाज देता है] अरे बाहर कौन है।

(सिपा०)हुजूर क्या हुक्म है।

(जुल्मा०)जल्लाद तैय्यार हैं।

(सिपा०)जी हुजूर बाहर हाजिर हैं।

(जुल्मा०)बुलाओ। (जल्लाद आते हैं)

(जल्लाद) हमलोग हाजिर हैं।

(जुल्मा०)अच्छा तुम लोगों को एक काम करना है मगर देखो बहुत पोशीदा माहिनी और तारा को पोशीदा तौर जङ्गल में लेजाकर कत्ल करो और उसकी खबर मुझे आकरदो।

(जल्ला०)जो हुकम हुजूर (जाते हैं)

(जुल्मा० ठहरो देखो कहीं बात न खुल जाय राज जाहिर न हो जाये।

(जल्ला०) हुजूर बेफिकर हैं कत्ल के बाद अर्ज किया जावेगा।

(जुल्मा० शाबाश मुझे तुमलोगों से ऐसीही उम्मीद है। (जाना)

(परदा ४ था खत्म)

अंक १ ला

[परदा ५ वा]

[स्थान] जनाना बाग ।

(चन्द्रकला राजकुमारी का सहेलियों के साथ नजर आना)

(चन्द्र०) सखियों फूलों की कलियां खिलकर कैसी मालुम होती है ।

(सहे०) बेशक हुजूर की फुलवारी खिल उठी ।

(सहेली) खुशबू से तर हो उठी ।

(सहेली) मगर बेहोशी का आलम है ।

(सहेली) होश कराने वाला चाहिये ।

(सहेली) इस गुल की खुशबू लेनेवाला ।

(सब) बुलबुल चाहिए ।

(सहेली) प्यारा क्यारी बाग की खिलती कली तुमभी तो हो ।
सब खुशनुमा गुलों में खुशबू प्यारी तुमभी तो हो ॥

(चन्द्र०) अरी तुम लोगों को नशा आगया ।

(सहेली) नहीं प्यारी जवानी का होश आगया ।

(सहेली) फुलवारी फूल गई ।

(सहेली) बुलबुल को फंसाना चाहिये ।

(सहेली) फंस आयतो नखरे के दाने देना चाहिये ।

(सहेली) जब चुगे पर होतो नैनों के तीरों से घायल करना चाहिये –

(सहे०) जब बिसमिल होजाय तो गले का हार बनाना चाहिये।

(चन्द्र०) अरीओ हराम ज़ादियों आज तुमने क्याभचारक्खा है

(सहे०) अपनी जानू को प्यारा बुला रहा है।

(चन्द्र०) यहां से जाव मुझे नबनाव-न सताओ नहीं तो शरारत खे दूगी ज्याद्ह सताओगी तो ईश्वर कसम मैं रोदूगी-

(सहे०) ओरी २ प्यारी मजाक ही से रूसगई खफा होगई।

(गाना)

मन मोहन छैला वसा लोवे मन चाहना

(सहे०) दिलदार सा मन सारसा गलहारसा जो दिलवर हो दिल चा० मन मोहन०

(चन्द्र) जाओ २ मोहे न मनाओ बातें न बनाओ हटीजाओ

(सहे०) कोन रंगीले रसीलेसे प्यारी नैनों से नयना मिलाओ

(चन्द्र०) यही नैना मिलानेवाली अरी चल चल चल

वही बातें बनानेवाली अरी चल चल चल

(सहे०) प्यारी दुलारी जाऊं बलिहारी जोबनकी शोभानिराली सुन्दर लटकदार चञ्चल मटकदार बांकी अदाओं से निहार ना। मन मोहन०

(चन्द्र) सखियों अब ज्यादह छेडोगी तो म तुम्हें सजादूगी

(सहे०) यानी हमें छोडकर प्यारे से नेहा लगाओगी.

(सहे०) प्यारी अकेले ही वस्ल का मजा न लेलेना.

(सहे०) हां प्यारी हम लोगों की भी याद रखना.

(सहे०) बहार आई कफस म मिला बुलबुल को पैमाना
हुई रुखसार कद्दावर हुस्न पे शानी है मस्ताना.

(चन्द्र०) चल हट ले मैं जाती हूं तुम सब बकती रहो,
(जाती है)

(सब०) हाय प्यारी तो खफा होगई रूस गई.

(सबका जाना)

(परदा ५ वा खत्म)



अंक १ ला

(परदा छट्टा)

(सीन खेमागाह पेश खेमा)

(शाहजादाहिन्दका अपने चन्द मुसाहिबों के हमराह दूल्हा के लिबास में आना) (शमिश गराका सहरा गाना)

(शाह) सिपहसालार मेरे शादीसे इनकार करनेपर भी मुझे क्यों दूल्हा बनाकर मेरे ऊपर जब्र किया जाता है।

(सिप०) क्या हुजूर जलसा शादी भी कोई जुर्म है जो हुजूर ऐसा फरमाते हैं ।

(शाह०) बेशक जबकि इनकार करदिया गया तो फिर शादी करना ज्यादती वो जब्रके सिवा और क्या कहा जासकता है ।

(सिप०) शाहजादा साहब आप भूलते हैं जशन शादी कोई जब्र या जुर्म नहीं येतो सिर्फ वालदेन की ख्वाहिशके साथ २ दुनिया की नियामतों की पहली सीढ़ी है और आराम का तरीका विहिश्त है ।

(शाह०) नहीं मुझे ऐसी विहिश्त की जरूरत नहीं अब्बाजान मुझपर जब्र कर रहे हैं ।

(सप०) तो क्या हुजूर इसके खिलाफ हैं ?

शाह०) बेशक बिलकुल इत्तफाक नहीं है।

सिप०) तो हुजूर बादशाह सलामत से क्या अर्ज करदिया आवे?

(शाह०) नहीं अब उनको मालूम करने की जरूरत नहीं।

(सिप०) हुजूर बराये खुदा शादी से इनकार न करें वरना यह समझा जायगा कि हुजूर वालदेन के अरमानों का कत्ल ही करते हैं।

(शाह०) नहीं मैं इसमें जरा भी चूं न करूंगा, मगर हां तुम लोग यहांपर मेरे लौट आने की इन्तजारी करो जब तक मैं वापस न आ जाऊं, कदम न बढ़ाना, समझे! (जाना)

(सिप०) अफसोस शाहजादे को भी कैसा जुनू सवार है जो शादी से इनकार है।

(सिप०) जी सरकार मालूम नहीं क्या खयाल है!

(दूसरा) अजी जवानी का आलम ठहरा किसी बुलबुल का साया पड गया होगा।

(सिप०) अरे चुप- शाहन्शाह तशरीफ फरमा होते हैं -

(बादशाह का आना)

(बाद०) तुम सब यहां क्यों अटके? शाहजादा किधर-गया? (सब चुप रहते हैं) -क्यों बोलो क्यों- चुप हो?

(सिप०) हुजूर शाहजादा साहब हम लोगों को यहां पर ठहरा कर कहीं तशरीफ ले गये हैं और इन्तजार करने का हुक्म फरमा गये हैं।

(बाद०) (क्या वह भाग गया! -क्यों?

(सिप०) जहांपनाह हम लोग बेकुसूर हैं।

(बाद०) हां मुझे मालूम हो गया सोचा हुआ खाक हो गया-खुदा ऐसी औलाद से तो बे औलाद ही रहने देता तो बहतर होता अजब अफतुल हवास लड़का है अच्छा तुमलोग वापस जाओ।

(बादशाह का सबके हमराह जाना)

(सीन ६ वां खत्म)



(अंक १ ला)

[परदा ७ वां]

[सीन जंगल का रास्ता]

[चंडूल मसखरे का शाहजादे की तलाश में आना और बैठकर भंग अमल लेना]

(चं०) चंमोला मगनगह चोला जद्दा भंग का गोला अमल दसपांच तोला कुंडीमें घोला पीकर प्रेम से बोलो प्यारे चंमोला (पीताहै ।) यारों कसम ईश्वर की इस जनूनी शाहजादे से तो मैं अजीज आगया तलाश करते २ पैरों में छाले आगये मगर अबतक उसका पता न मिला आज तीन दिन से बराबर भाग २ फिरता हूं न खाने का ठिकाना न पीनेका ठिकाना किधर जाऊं कहां ढूंढूं अरे भाई शाहजादे मिलजा क्यों इस बिचारे गरीब मुर्गे को बेमौत मुफ्त खुदागन को जिन्दा ही भेजने पर तुला हुआ है किधर छिपाहै निकलआ भाई जरा इस गरीब पर रहम कर मैं तेरे पैर पडता हूं जरा तरस खाजा-(एक देहाती का आना देखकर) अरे ओ दहियर चन्डूल लगी जंगल की हवा गया

दुमका हिलाना भूल जरा बताओ इधर से कोई दीवाना शाही लिबास में जाते हुए तेरी नजर आया है ।

(देहाती) हमका जामी तौन एक गौरा २ असरहा तो वैहा अस भागत जाता उरी कैत तौन जाता रहा। काहेतू काहेता खोजत है रे-

(चं०) अबेओ उल्लू की दुम फाख्ता जरा इधर आ तेरे नाक पर एक बड़ा हाथी है उसे निकाल दू

[नाक पकड़ मरोड़कर भागजाता है ।]

दे०) अरे रे मोर नाक का ऐंठ दिहिस-रहा हम देखित है मोर ससुर धा कौने कैती जउवे मर्छरा अस भूज खेवेत वही मोर नाऊ । (जाता है)

(परदा ७ वां खत्म ।)

(परदा ७ खत्म)

अंक १ ला परदा ८ वां स्थान (मोहिनी का महल)

(मोहिनी वो तारा का सोते नजर आना जल्लादों का पोशीदा तौर दाखिल होना)

(जमादार) सो रही हैं (जल्लादोंसे) खबरदार जरा भी खटका हुआ तो जाग जायेगी (छुरा जेबना निकाल मोहिनी वो तारा को सुंघा कर बेहोश कर देता है) बहुत होशियारी से काम अंजाम देना -

(ज०१) हाय २ हुजूर ! ऐसी भोली सूरत पर किसतरह हाथ उठेगा ?

(ज०२) बेशक भाई मिसाले चांद है खुदा की कुदरत मुसव्विर की खूबी का एक नमूना है। शाने खुदा है।

(ज०३) चुप भी रहो - अगर हम लोग ऐसी बातों पर गौर करने लगें तो नौकरी क्या खाक हो सकेगी-

(ज०१) चलरे बेहूदे क्या ऐसे खुदा के नमूने को नेस्त करने के लिये ये हाथ हैं। इन हाथों से तो खूनी कत्ल होता है -

(ज०२) भाई इसे तो खुदा ने दिमाग अक्ल रहम कुछ नहीं बख्शा-

(ज०३) बस २ रहने भी दो ! बडे दीमाग रहम वाले आये नौकरी छोड घर में बैठना तब रहम दिली काम में लाना इस समय तो तामिल हुक्म की करनी पडेगी।

(ज०१) चलचे ! ऐसे हुक्मों पर लानत भेजता हू !

(ज०ज०) क्यों कराम ! क्या कहा हुक्म पर लानत है ?

(ज०१) बेशक हुजुर ये हाथ गनिमों के लिये हैं न कि ऐसी भोली भाली सूरतों के कत्ल के लिये।

(ज०ज०) अगर नोकरी अजीज है तो तुमको हुक्म तामिल में तकरीर करना वाइसे सजा है - समझे।

(ज०१) हां समझता हूं अगर य समन नौकरी अजाव करना होगा तो बंदा ऐसी नौकरी से इस्तीफा दाखिल करता है।

(ज०ज०) हां गुश्तागी- रहीम इसे गिरफतार करलो !

(ज०२) हुजूर खाक सार इस हुक्म को तामिल करने से मजबूर है।

ज०ज०) क्या तुझ पर इस शेतानका साया पड गया ?

(ज०२) हुजूर बंदे से तो शेतान भी खौफ खाता है ? शेतान की साया तो उस पर समझना चाहिये जो बगेर किसी वजह एक बेकुसुर को कत्ल करा रहा है

(ज०ज०)चुप रह ! नालायक ! गुस्ताखीसे पेश आताहै? निकल तुझे भी नोकरी से अलग किया !!

(ज०२) बहुत बहतर बंदे भी ऐसी नोकरी से नफरत करता है -(जाता है)

(ज०१) ए चंद रोजा हस्ती इस खुदाई फरिश्ता को क्यों तकलीफ देता है वोह रहम दिल है उसे खुदा ने रहम दिया है और एक तू है जिसे रहम लब्जसे सख्त दुशमनी है।

(ज०ज०) चुप सौदाई ! चल तू भी रफान होना सजाई इसे

गुज दिलों से तामिल हुक्म हो सकतो है ?

(अ०१) ऐय दुनिया के कचरे ! सुन बंदा तो जाता है मग र याद रख खुदा का कहर तुझ पर भी बरपा होने वाला है- (जाना)

(ज०ज०) खैर देखा जायगा मुहम्मद खलील ! तुम दोनों इन का पोशीदातोर लेजा कत्ल करो !! समझे।

(दोनो जल्लादों का बेहोश मोहिना व तारा को ले जाना- परदे का ट्रांसफर होना साफ जंगल जल्लादों का मय तारा मोहिनी के दाखिल होना मोहिनी का होश में आना)

[मो०] (ताज्जुब से चारों तरफ देख कर) तुम कौन हो शैतानों ! और मुझ से क्या चाहते हो ?

[ज०] ब हुक्म सिपहसालार हमलोग तुम दोनों को वास्ते कत्ल यहां लाये हैं बस खुदा को याद करो और गर्दन झुकाओ !!

(मो०) क्यों मैंने क्या कसूर किया जो कत्ल का हुक्म हुआ ?

(ज०) इस बहस से हमें सरोकार नहिं लडकी तू तयार हो !!

(मो०) प्यारे मुहम्मद देखो तुम भी तो औलाद वाले हो खुदा ने तुम्हें सीना सिने में मुहब्बत और रहम बख्सा है ! इसलिये मुझ पर रहम करो ! मुझे छोड दो !!

(ज०) लडको तू मुझे बुजदिल बना रही है रहम ! हमारी कवायद में तो रहम लफ्ज भी नहीं बस मरने पर

तयार हो !

(मो०) क्या कहा ! तो क्या कोई बचने का चारा नहीं ?

(ज०) नहीं बिल्कुल नहीं ! (जल्लादोंसे) वजीर तलवार खींचो (दोनों जल्लादों का तलवार उठा कत्ल को-आमाद होना)

(मो०) रहम ! रहम !! प्यारे मुहम्मद रहम !!! या पर वरदिगार -

(दरख्ते का आहिस्ता गिरना)

[शाहजादे का गाते हुए आना]

॥ गाना ॥

भगवान तेरी कुदरत के हैं शाही दरबार ।
लाजवाब नक्शों के हम सब हैं शुक्र गुजार ॥
तुही गम गुसार तुही जरनिगार तुही मदद गार ।
तेरी मेहर निगाहों के हम नादिम सरजन हार ॥
[शेर] एक कतरा आब से इन्सान पैदा कर दिया ॥
ना चीज पुतले खाक को शाहों का सर वर कर दिया
दर वेश से वदतर को तूने शाहों का सरताज किया
लाखों के सर के ताज को दर २ का मारा कर दिया २
सरकार गरीब निवाज तेरे मोहताज -
तेरी कदमों पर सर लाखों वार निसार - महरबान-

ओह मैं कहा आगया ! किधर जारहा था किधर भटक गया किस स्थान पर फस गया ! हे भगवान ! कहीं रास्ता ही नजर नहीं आता !!!

[चीख की आवाज] हैं ए! ये आवाज कहां से आई ! कितनी दर्दनाक सुनाई पडती है क्या कत्ल होगया ? या ईश्वर ! (जाताहै) (परदा का फटना)

[मोहिनी वो तारा पांव जंजीर से बांधा दो जल्लादों का वार करने पर आमादा शाहजादे का पिस्तोल से वार करना दोनों जल्लादों का गिरना शाहजादे का मोहिनी के पास जाकर है रत में रखना टेबला] ।

(अंक १ ला खतम)



(अंक २ रा)(परदा १) स्थान- जंगल वही

[शाहजादा- मोहिनी ! तारा का आपस में बात करना]

[शाह०] क्यों बानू आपने अपने राज से अब तक मुझे आगाह न किया क्या कुछ हर्ज समझा ?

(तारा०) नहीं हर्ज तो कुछ नहीं है बात यह है कि हमारी सहेली अपना हाल जाहिर करने से पहले हुजूर के हाल से आगाह चाहती है।

[शाह०] आह ! मुझ बेवतन का हाल ही क्या है !—

॥ गाना ॥

न पूछो हमें हम कहां के बसर हैं।
कहां आशियां और किस जगह समर है ॥
न हम किसी के न कोई हमारा।
हम बेवतन हैं उजड़े शहर हैं ॥
न पूछो हम हैं सदमें उठाये।
कहां घर हमारा कहां हम भुलाये ॥
गर्दिश के चक्कर ने भेजा यहां पर।
[illegible] के वक्षे बसर हैं ॥
[illegible] हम वो हैं जो सवानें चपेटा।
फूल हम वो हैं जो डाली से टूटा ॥
इन्सान वो हैं जो किस्मत का हेटा।
जीता हूं अब तक इलाही मेहर है ॥

[नजम] मेरा हाल क्या है मैं एक गुम राह बे वतन अजी

जैसे बिछुड़ा हुआ गरदिश का चपेटा किसमतका हेटा एकबशर हूं— हाय अफसोस !!!

[तारा] ए मेरे महरबान! मुझसे कुसूर हुआ जो आपको तकलीफ दी! माफ कीजिये! अगर हम लोगों को ऐसा मालूम होता कि हुजूर को तकलीफ इस कदर होगी तो हरगिज इस तरह की बदतमीजी न होती— खैर आप के शादियाना लिबास से ऐसा जाहिर होता है कि हुजूर जलसाये शादी से फरार होकर आये हैं इस की गवाही आपके पैरों की मेंहदी है -

[शाह] शाबाश खूब पहचाना वह जो वस्ले जाम था जहर सर नाम था इसी वजह दिल घबराया वहां से भाग आया मगर (खुद से) है! मुझे इस जान से सख्त नफरत थी लेकिन इसमिस्साले चांद का नूरानी चहरा देखते ही सबरकरार हुआ दिल बे करार हुआ शक्क बेशक मोहिनी है !!!

[तारा] वाह वाह क्या ही भोले बने जाते हैं खुद राज जानते हैं - वाह बलिहारी।

[शाह) [अचम्भे से] क्या कहा मैं इनसे वाकिब हूं क्या खूब अगर मेरी ऐसी किसमत होती तो मैं अपने को तकदीर वाला समझता

[तारा०] क्या आपने अभी हमारी प्यारी का नाम जबां से नहीं निकाला? नाम लेते जाते हैं और भोलेर भी बनते जाते हैं हमें बनाते हैं।

[शाह०] तुम क्या कह रही हो? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया !-

(अंक २ रा)(परदा १) स्थान- जंगल वही

[शाहजादा- मोहिनी ! तारा का आपस में बात करना]

[शाह०] क्यों बानू आपने अपने राज से अब तक मुझे आगाह न किया क्या कुछ हर्ज समझा ?

(तारा०) नहीं हर्ज तो कुछ नहीं है बात यह है कि हमारी सहेली अपना हाल जाहिर करने से पहले हुजूर के हाल से आगाह चाहती हैं।

[शाह०] आह ! मुझ बेवतन का हाल ही क्या है !!—

॥ गाना ॥

न पूछो हमें हम कहां के बसर हैं ।
कहां आशियां और किस जगह समर हैं ॥
न हम किसी के न कोई हमारा ।
हम बेवतन है उजड़े शहर हैं ॥
न पूछो हम हैं सदमें उठाये ।
कहां घर हमारा कहां हम भुलाये ॥
तकदीर के चक्कर ने भेजा यहां पर ।
[illegible] के वश बसर हैं ॥
चमन हम वो हैं जो खवानें चपेटा ।
फूल हम वो हैं जो डाली से टूटा ॥
इन्सान वो हैं जो किस्मत का हेटा ।
जीता हूं अब तक इलाही मेहर है ॥

[नजम] मेरा हाल क्या है मैं एक गुम राह बे वतन अजी

जोंसे बिछुड़ा हुआ गर्दिश का चपेटा किस्मतका हेटा एकबशर हूं— हाय अफसोस !!!

[तारा] ऐ मेरे महरबान! मुझ से कुसूर हुआ जो आपको तकलीफ दी! माफ कीजिये! अगर हम लोगों को ऐसा मालूम होता कि हुजूर को तकलीफ इस कदर होगी तो हरगिज इस तरह की बदतमीजी न होती— खैर आप के शादियाना लिबास से ऐसा जाहिर होता है कि हुजूर जलसाये शादी से फरार होकर आये हैं इस की गवाही आपके पैरों की मेंहदी है -

[शा] शाबाश खूब पहचाना वह जो बस्ले जाम था जहर सर नाम था इसी वजह दिल घबराया वहां से भाग आया मगर (खुद से) हैं! मुझे इस जान से सख्त नफरत थी लेकिन इसमिस्साले चांद का नूरानी चहरा देखते ही सब्रफरार हुआ दिल बे करार हुआ शक्ल बेशक मोहिनी है !!!

[तारा] वाह वाह क्या ही भोले बने जाते हैं खुद राज जानते हैं - वाह बलिहारी।

[शाह) [अचम्भे से] क्या कहा मैं इनसे वाकिब हूं क्या खूब अगर मेरी ऐसी किस्मत होती तो में अपने को तकदीर वाला समझता

[तारा०] क्या आपने अभी हमारी प्यारी का नाम जबां से नहीं निकाला? नाम लेते जाते हैं और भोलेर भी बनते जाते हैं हमें बनाते हैं।

[शाह०] तुम क्या कह रही हो ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया !-

(अंक २ रा)(परदा १) स्थान- जंगल वही

[शाहजादा- मोहिनी ! तारा का आपस में बात करना]

[शाह०] क्यों बानू आपने अपने राज से अब तक मुझे आगाह न किया क्या कुछ हर्ज समझा ?

(तारा०) नहीं हर्ज तो कुछ नहीं है बात यह है कि हमारी सहेली अपना हाल जाहिर करने से पहले हुजूर के हाल से आगाह चाहती है।

[शाह०] आह ! मुझ बेवतन का हाल ही क्या है !—

॥ गाना ॥

न पूछो हमें हम कहां के बसर हैं।
कहां आशियां और किस जगह समर है॥
न हम किसी के न कोई हमारा।
हम बेवतन है उजड़े शहर हैं॥
न पूछो हम हैं सदमे उठाये।
कहां घर हमारा कहां हम भुलाये॥
तकदीर के चक्कर ने भेजा यहां पर।
[illegible] के वश बसर हैं॥
[illegible] हम वो हैं जो सबानें चपेटा।
फूल हम वो हैं जो डाली से टूटा॥
इन्सान वो हैं जो किस्मत का हेटा।
जीता हूं अब तक इलाही मेहर है॥

[नजम] मेरा हाल क्या है मैं एक गुम राह बे वतन अजी

जोंसे बिछुड़ा हुआ। गर्दिश का चपेटा। किसमत का हेटा। एकबशर हूं— हाय अफसोस !!!

[तारा] ए मेरे मेहरबान! मुझ से कुसूर हुआ जो आपको तकलीफ दी! माफ कीजिये! अगर हम लोगों को ऐसा मालूम होता कि हुजूर को तकलीफ इस कदर होगी तो हरगिज इस तरह की बदतमीजी न होती— खैर आप के शादियाना लिबास से ऐसा जाहिर होता है कि हुजूर जलसाये शादी से फरार होकर आये हैं इस की गवाही आपके पैरों की मेंहदी है -

शा] शाबाश खूब पहचाना वह जो वस्ले जाम था जहर सर नाम था इसी वजह दिल घबराया वहां से भाग आया मगर (खुद से) हे! मुझे इस जान से सख्त नफरत थी लेकिन इसमिस्साले चांद का नूरानी चहरा देखते ही सब्रफरार हुआ दिल बे करार हुआ शक बेशक मोहिनी है !!!

तारा] वाह वाह क्या ही भोले बने जाते हैं खुद राज जानते हैं - वाह बलिहारी।

शाह) [अचम्भे से] क्या कहा मैं इनसे वाकिब हूं क्या खूब अगर मेरी ऐसी किस्मत होती तो में अपने को तकदीर वाला समझता

तारा०] क्या आपने अभी हमारी प्यारी का नाम जबां से नहीं निकाला? नाम लेते जाते हैं और भोलेर भी बनते जाते हैं हमें बनाते हैं।

शाह०] तुम क्या कह रही हो ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया !-

(तारा) क्या अभी आपने मोहिनी का नाम नहीं लिया ?

(शाह) [आह हा ! अबसमझा अच्छा इस हुरेल का नाम भी मोहिनी है ?]भला अपने नाम से तो वाकिब कीजिये !!

(तारा) मेरा नाम वही जो चांद के साथ रहना चाहिये।

(शाह) वाहवा आप तारा हैं ? पर तुम हो बहुत चालाक !!

(तारा) अब जनाब मैंने आपका क्या कुसूर किया जोमुझे गाली दे डाली ?

(शाह०) बस खामोश हो जाओ मुझे अबन बनाओ बाला की न खिलाओ !

(मोहि) तारा तू बड़ी खराब है ! चल यहां से !!

(तारा) हाय २ अब स्रोम गालियों का दो तरफा फव्वारा छुटा ! खुदा खैर करे !!

(शाह०, तारा तुह्मारी रानी क्या घर जाना चाहती है ? तो मुझे पता बताइये दोनोंको वहां पहुचा दियाजाये

(तारा) नहीं २ इनका कहिं ठिकाना नहीं अब तो इनकी कब्र भी यहीं बनेगी !!

(मोहि०) चलना सजाई अच्छी तान मिलाई क्या बना सौदा

(तारा) हाय प्यारी ! मुझे क्यों कुसूर वार ठहराती हो !! खुद क्यों अलग होती जाती हो !! चोचले दिखाती हो

(मोहि०) हराम जादी ! तू ऐसे बाज न आयेगी !! ले इनाम !!! (मारती है ।)

(तारा) हाय ! मैं मर गई !! भर पाई सता - अरेरे मेरी पीठ है या धोबी की सिला ?

(मसखरा चंडल का आना शाहजादे को देखकर वो मारा

बेटा भागता फिरता है अभागा। बस एक सोटा जमाकर मक्कार को मगरूरी किये देताहूं पौवारा)

पास आकर-

(मस०) क्यों जनाब दो सोटे जमां दूं भेजे में से चुनू फरार करदूं ?—

(मोहिनी का गुस्से से तारा की तरफ देखना तारा का अफसोस जाहिर करना शाहजादे का समझ लेना)

[शाह०] आप इस पर नाराज न हों-ये बड़ा पाजीहै मेरा लंगुटिया है। और पीर है— (मसखरे से) क्यों रे चंडूलन यहां भी आकूदा ?

(मस०) क्यों, दोस्त है ! या कोल्हे का गायता ? मैं तो तेरी कब्रमें भी आ धमकूंगा और वहां भी अगर तू खामोश रहा तो दो सोटे जमाकर तुझे बात करना सिखाऊंगा! समझा? (मोहिनी को देखकर) और तू भाग कर वहां क्यों आया और इन शैतान की खालाओं को कहां पाया ?

(शाह०) चुप दिवाली बकता है ? मतवाला. कर यहां से मुंह काला !

(मस०) (हंसता है) अरे बाबा तो ये बला कहां से मोल ली ? तूने जिससे पीछा छुड़ाया वही फिर सामने आया—

(शाह०) अबे फजूल बकता ही रहेगा या मतलब पर भी आयेगा ?

(मस०) भाड़ में जाये तेरा मतलब यहां तो पेट में हिरन चौकड़ी भर रहे हैं भूख के मारे हम मर रहेहैं

तीन रोज से बराबर दौड़ते चले आ रहे हैं। आंखों में छाले और पैरों खड़े पड़गये तब कहीं आज आकर इस खबीस का दौर पाया।

(शा०) चुप बे नीमबहशी ला तेरा लोटा दे, मैं पानी ले आऊं

(मस०) ना बाबा ऐसी ठगाई कहीं दूसरी जगह करना। चौबे इस तरह नहीं ठगा सकते !! डोर फांसा डोर लोटा सोटा लंगोटा-इन में कुछ रहे तो वो है ठोटा उसके पास बचे न कठोटा !

[शाह०] अबे मक्र के बेहिये देता है या देख !

[तलवार निकालना]

(मस०) अरर ! अबे तलवार को म्यान कर ! ये ले !!

(लोटा देता है)

(शाह०) हां अब माथे आये चोरों का भेजा ठीक करने का मसाला यही है।

(मस०) जा वे लोटा दे दिया तो फिलेरी दिखाने लगा, वरना (सोटा तानना) —

(शाह०) क्यों फिर पागल पन सवार ! निकालूं तलवार ?

(मस०) ना ना बाबा मुझे डर लगता है ! जा जा यहां से दफान हो (शाहजादे का जाना) देखा, दोस्ती का तो दम भरता है और बात २ में पेटा तलवार निकालता है, मुझे उस वक्त गुस्सा तो आया मगर इस तरफ पीगया, जिस तरह आज कलके नवसिखे जेंटिलमेन दोस्तोंमें शराब की बोतल समेत हलक के अंदर उतार लेते हैं अगर गुस्सा मुंह में आजाता तो आप लोग भी देखने की इसी डंडे

से उसकी खोपड़ी का भुरता कर डालता-अगर डाकू आते तो फिर यारों के हाथ की सफाई देखना-

[डाकूओं का आना मसखरे का कांपना तारा मोहिनी का बेहोश होना]

[डाकू०] क्यों मियां तीसमारखां ! लो हम लोग आगये, आइये हाथ सफाई दिखाईये—

[मस०] में ! पें ! में में !! कुछ नहीं कहता था मुझे छोड़दो इस गरीब मुर्गे को जिबह न करो अगर आपको नागवारा गुजरता है तो ये मुर्गा अपनी कुकड़ूं कूं बंद करता है।

[डाकू] चुप मुरदार- आज तेरा कीमा निकाला जायगा।

[मस०] अरे बाबा खुदा के वास्ते रहम करो मैं अपनी बीबी का इकलौता शोहर हूं मैं मर जाऊंगा तो वह भोली भाली जोरू परेशान होगी ! [रोता है]

[डाकू०] [हंसता है] चुप अगर तू मर गया तो तेरी जोरू समझेगी कि घर का कचरा साफ हुआ-[डाकू से] इसे हलाक करदो—

[मस०] अरे नहीं २ तुम मेरे पैर पड़ो मुझे छोड़दो !!

[डाकू०] चुप शरीर [डाकू बांध लेते हैं]—

[दूसरे डाकू बेहोश तारा वो मोहिनी को उठा कर लेजाते हैं। सब चले जाते हैं। शाहजादा आकर हैरत से देखता है टेबलो]

(परदा १ ला खतम)

(अंक २ रा) (परदा २ रा नकल)

+ स्थान गुलचमन का मकान +

गुलचमन का गाना (दादरा)

मैं चंचल छबीली नार राखूं जोबन को कैसे सम्हाल के
पड़ी पाले जवानी के जाल के ॥
मेरा जोबन है सबसे अलबेला मेरे चहरे पर फूला बेला
हुस्न करता है जुल्मों अमेला,
इन्हें कैसे राखूं सम्हाल के। मैंचंचला
जाऊं घरसे जभी बनठन के लाखोंहैं जातेजवानो के सदके
मुए फिरते हैं हाथों को मलके,
मुझे लाले पड़े हैं जानके (मैंचंचल०

उई अल्ला! मैं कहां जाऊं किधर छिपूं? मुए निगोडोंने मेरा बाहर जाना ही बन्द किया! जिधर से निकलूं मुए आवाज कसते हैं कोई कहे जानी गजब न ढाओ, कोई कहे अजी जरा रहम फरमाओ, मुए अपनी आंखों में घासलेट क्यों नहीं डाल लेते! घरसे निकलना ही दुष्वार है कहिये जनाब मैं क्या कोई घरकी हांडी हूं? जो अन्दर ही पडी सड़ा करूं-पर एक मुंआ निआला पडे उसके आंखों में जाला मर जाये मुए की खाली मेरे ऊपर कुरबान ही हुआ जाता है, मगर मैं भी उसे उल्लू बल्के उल्लू का पट्ठा ही बनाके छोडूंगी! अरर! सामने से वही आरहा है! छिप जाऊं और देखूं! क्या गुल खिलाता है! क्या रंग लाता हैं!

(मिस्टर गडबड का इंगलिश लिबासमें एक पैरमें पन्जाबी जूता पहने आना)

(गड०) धत् तेरे जोरू की ऐसी तैसी हराम जादी ने नाक

में दम कर रक्खा था अजी मियां ज्योंही मैं लिबास बदल घरसे जानेको तैयार हुआ कि शैतान की खाला बस खोपडी ही पर आकर सवार हो जाती थी कहे किधिर जातेहो मैं नहीं जाने दूंगी, क्या मैं इसके बाप का नौकर था या इसने मुझे खरीद कर लिया है जो मैं इसके हुकम को माना करू ? आज इन्जानिबने उसकी सब शैतानी भुलादी जैसे उसने टोकना चाहा बस बिगड ही तो पडा, मार जूतियों के तमाम नशा उतार दिया, घरसे निकाल बाहर किया और ताला बंद कर सिधा गुल चमन प्यारी का दरवाजा खटखटा या, बस अब उसे बुलाता हू निकाह पढा गुलछर्रे उडाता हूं अजी जनाब इस जोरु से तो बंदा बेजार होगया, या खुदाकी कसम ज्यों ही घर मैंपेर रखाकि बस शामत हो आजाती थी कहे किमियां आज दाल नहीं कल नमक नहीं साडीला दो झुमके बनवादो अजी मेरे माफिक बडे आदमीयों को भला ऐसा गवार हो सकता था कैसा नहीं वैसी सूरत भी नहीं तो क्या आदमीतो बडे ही है दूसरे लोग अगर न कहें तो न सही मगर हमतो दिल ही में हैं रहा फरमायश इसे पूरी कौनकर सकता है अजी अब इन झमेलों में पडने से क्या मतलब बेडी ही मुशकिलों से बढतो टली अब प्यारी गुल चमन कमायेंगी और ईजानिब कुरसी टेबुल मटन चोप उडायेगे।

[गुल चमन के दरवाजे पर आवाज देना] प्यारी गुलचमन२

(गु०)[साईड]देखो मुंआव विस मेरी कमाईका भाड खायेगा कमाई न करेगा (सामने आकर) क्याहैमियां क्यों कुत्ते की तरह भूंक रहे हो ?

[गड०] अरी कुत्ते की घरवाली में कबसे तुझे गधे कि मांति कचिल्ला रहा हूं मगर तेरे कानोंको सुनाई न दिया

[गुल०]बस यही सोचकर तो न बोली जब देखाते। तुम्हारी सूरत नजर आई तब समझा कि मियां गडबड ही चिल्ला रहेहैं

(गड०) ऐसी बातों से तो मालूम होता है कि जरूर कुछ गड़बड़ हुआ चाहता है खुदा खैर करे। लो बीवी अबतो शादी करोगीना मैंने तुम्हारा सब रास्ता साफ कर दिया। बीवी को तलाक देदिया

(गुलब०)क्यों २ उस बेचारी ने क्या नुकशान किया जो तलाक दी पका पकाया खाना अब कहां नसीब होगा

(गड०) क्यों क्या तुम न खिलाओगी ?

(गुल०) मैं क्यों खिलाने लगी क्या मैं तुम्हारी बीबी हूं ?

(गड०) नहीं पर आजही तो होने वाली हो काजी जी को बुलाऊं ?

(गुल०) क्यों किसलिये क्या मुझे अवारा समझा है ?

(गड०) अरे तूने तो शादी को इकरार किया था !

(गड०) अजी मीयां होश की दवा करो में क्या कोई बाजार हूं जो एक से तकरार हुई तो चट दूसरा निकाह कर लिया ?

(गड०) अरी क्यों वादे से मुकरती है जूती समेत आंखो में घुसी जाती है बीबी को भी निकलवा दिया और अब सफा इन्कार करती है !

(गुल०) चल हट मुए दपाली- बम्बई की सफेद गली में पा-
ऊडर मले हुए बहुतसी साठ साठ बरसकी कुआं
री टूटे छकड़ों की तरह कुड़कती फिरती है उन्हीं
मेंसे किसी को लाकर मौज करो यहांसे रवाना हो!

(गड०) अरे ए भिखारी मुझे जोरू की जरूरत है या मांकी ?

(गुल०) वो दोनों ही काम पूरी तौर बजा लायेगी खाना तो
बेटे के माफिक खिलायेगी और पलंग पर गले ल-
गायेगी! अरर गजबहो गया !!

(गड०) क्या हुआ ?

(गुल०) मेरा शोहर आगया लो बेटा अब भाग जाओ वरना
खोपड़ी कबाब बन जायगी ।

(गडब०) ए माई मैं तेरे पैर पड़ता हूं कहीं छिपादे ।

(गुल) चल हट मुए दफानहो—

(गड़बड़) अरे बापरे आगया [भागनाचाहता है]

(तुर्रखांका आना—गड़बड़ को पकड़ कर)

(तुर्र खां) क्यों बे तू कौनहै नकारा जो होना चाहता था
पौबारा—

(गड़बड़) गड़बड़—

(तुर्रे) अरे क्या गड़बड़ किया? (जोर से) (ए बीबी-बीबी)
खुदा की शान जोरू होतो एसी हो ।

(गुल) हां मियां आई क्या कहते हो है— यह कौन है
आवारा ?

(तु०) यही तो मैं भी पूछताहूं- पर जबाब नदारत. खुदा

(गुल) मुए तू कौन है नासजाई ?

(गड०) अरे क्या भूल गई मेरी होने वाली लुगाई ?

(गुल०) चल मुए पागल कहीं को [शौहरसे] मियां इसे छोडदो ये पागल मालुम होता है ॥

(तुरे) मेरा भी ख्याल ऐसा ही है अबे पागल यहां क्या करने आया था बोल वरना खोपडी का गुद्दी बाजार बना दूंगा ।

(गुल०) प्यारे शौहर इसे जानेदो गूंगा है !

(गड०) देखो गूंगे की बच्ची कैसी बातें बना रही है गोया मुझे पहचानती हो नहीं—

(गुल० अरी गूंगेकी बीबी क्या बकती है और क्या मुंह से निकल गया

(तुरेंसे) जनाब मैं गूंगा नहीं हूं--

(तुरें०) अबे तो बतला तू इस मकानमें क्यों आयाथा ?

(गड०) सिरपर हाथ रखकर मैं मैं

(गुल) अजी मियां ये अच्छा दीवाना है टालो यहां से

(गड०) अरी ओ दीवाने की खाला क्या करदूं घोटाला ?

(गुल०) चुप रजाला--आया कहीं का गरम मसाला —

(गड०) अच्छा ठहर. अजी मिया सुनिये चाहे आप इस मक्काराके बापहों या शौहर-परवान

(तुरे०) चुप हराम जादे बाप बनाता है बीबी को मक्कार कहता है मेरी बीबी एक दम भोली है

(गड०) अरे ओ भोली के भोले सुनो बात ये है कि तुम इस औरत को चाहे पाकदामन कहो चाहे कुछ कहो पर इसने मुझसे मेरी जारु के घरसे निकाल

देने बाद मुझ से शादी का वायदा किया है । ना-

(तुरे०) क्यों बे औरतकी बच्ची ! ये क्या मामला है? सच बोल वरना खोपड़ी से भेजाही अलग कर दूंगा !

(गुल०) प्यारेशोहर इसपागल की बातों में आगये ये तो बेवकूफ पागल है मैं ऐसे गुलफाम को छोड़ इस रिजाले से शादी करूं ऐसा मैं भला कभी कर सकती हूं? आपको क्या मेरे पर शक है ?

(गड०) ये पागल की बच्ची मुझे झूठा बनाती है ।

(तुरे०) चुप बे नाबकार (देखने वालों की तरफ) मेरी औ-रत को बदनाम करता है (डाढी पर हाथ देकर) भला ऐसा भोला भाला मिसाले चांद चहरा ऐसी बद कारी कर सकता है ? (खुदाकी शान०) ।

(गुल०) हां मियां मैं तो तुम्हें अपने बेटा से भी अधिक चाहती हूं ।

(तुरे०) और मैं तुझे अपनी मांसे भी बढ़ कर समझता हूं (खुदा की) चल हट बे नाकारा दफान हो यहां से ।

(गुल०) साइडमें देखा कैसा उल्लू बनाया चल जा बे दफान हो ।

(गड०) हां बाबा औरत ऐसी ही होती है ।

॥ शेर ॥

चांदनी में खिल जाते हैं चांद के लच्छे लच्छे ।
जरीसी पाकीट पे बिगड़ जाते हैं अच्छे २ (जाताहैं)

(तुरे०) क्या बीबी. क्या सचमुच ये पागल था ?

(गुल०) मियां क्या आपको अभी तक शकही है ? पागल कीसी बातें करता था ? सुना नहीं

[तुरे०] हां हां बेशक, खैर इस किस्सेको दफान करो जरा एक गरमागरम बोसातो दिलाओ और एक नमकीन चटकीला भडकीला 'गाना' तो सुनाओ (खुदा की शान) !

गुलचमन को बोसा देना (असर धीरे) आपने तो बोसा क्या लिया मेरे गालको कबाब बना दिया ।

(तुरे०) बस इसीसे तो खाने का दिल होगया । (तमाशगिरों की तरफ देखकर) क्यों जनाब है किसी को ऐसी, अच्छा-प्यारी गाना गाओ ।

(गुल०) ॥ गाना ॥

सइयां मेरा कानों के बाली का मोती !
मैं जाऊं पनियां, संग लागे मोरे छोडेन मोय,
अकेली मोरी जान ॥
सइयां नादान मैं कुरबान नगर चलत,
नगर करत रात्रूं जैसे सांगो का मोती
छेल छबीला गबरू अलबेला बांका निराली बांको शान
बोसे दिलवाऊं गरबा लगाऊं लपट गलेसे सोती (बालम मेरे) (दोनों का मजाक भरी चालसे जाना)

(परदा खतम)

(अंक २ रा परदा ३ रा)

स्थान- डाकुओं का मकान

—[कोठड़ी के अन्दर मोहिनी तारा लेटी है मसखरा सीखचों- के अन्दर दरवाजे पर बैठा है]—एक डाकू पहरा देता है सीन जंगल—

(म०) मरदे खुदा ओ मियां आबाद (ठहर कर) गूंगा है या बेवकूफ

(डा०) चुप बे नाबकार शामत आगई क्या

(म०) अरे वाह २ जिस्म से तो इन्सान है मगर दौड़ा काटने-

(डा०) अबे चुप नहीं बेठता क्या घूंसे खायेगा ?

(म०) वाह यार अब तो कैंचुली बदली पहले काटने दौड़े अब शैतानी ?

(डा०) क्यों बे सूअर के बच्चे नहीं मानेगा-

(म०) बेशक ठीक कहा नजर तो ऐसे ही आ रहे हो- क्या सवाल का जबाव भी कोई भारी जायदाद है जो देने से इनकार है।

(डा०) अच्छा सलाम अब चुप हो गया ?

(म०) मैं पूछता हूं कि रहजिनी में ही जिन्दगी बरबाद करते रहोगे या आकवत भी सुधारोगे।

(डा०) क्या कहूं सिवाय इसके अब कोई चाराही नहीं रहा अगर कहीं नौकरी तलाश करने जावें तो देखते ही शक्ल साफ जबाब मिलता है कि जगह नहीं फिर क्या करें भाई दिलतो इस कार से बेज़ार है मगर मजबूरी है।

(म०) अरे यार! तू भी मुझे पूरा अक्लका गुलाब मालूम होता है! नौकरी तलाश करने को किस बेवकूफने कहा ?

(डा०) तो फिर क्या करेंगे पैसे वाले तो नहीं जो घर बैठे खाय

(म०) इतने दिन लोगों की गरदनें हलाक की और फिर भी मोची ही रहे—

(डा०) हम तो पिठलग्गु ठहरे बहुत ही थोडा हिसापाते हैं सो खाने भर के लिये होता है।

(म०) अरे इन्सानी हैवान कत्ल करो तुम मजा करें दूसरा क्या खूब अक्ल है अगर मेरी राह में चले तो जिन्दगी भर आराम करो

(डा०) चल ये चकमें औरोंको देना! क्या चकमा देकर फरार हुआ चाहता है?

(म०) धत् तेरे अक्ल के दुम में धागा! जरा सोचतो कि इस काल कोठरी से मैं किस तरह फरार होसकता हूं? सुन मैं कहता हूं कि मेरे कब्जे में एक दफीना है जिसमें करोडों की मालियत है सुना!

(डा०) हां हां आये न चालाकी पर मालियत है तो तुझे मुबारक मुझे क्या फिर वही बेहुदा इसरार अबे उस अहमक वो दफीना [तारा मोहिनी को दिखना] इन का है और मेरे कब्जे में है मैं तुझे देसकता हूं डाकूओं से रिहा कर सकता हूं।

(डा०) चल हट मुझे यकीन नहीं होता—

(म०) मैं कसम से कहता हूं तुझे दिखादूंगा—

(डा०) सच ईमान से कहता है ? अच्छा तो बतला ।

(म०) बस रहे न अकल के गोबर क्या मेरे पास रखा है जो दिखाऊं ?

(डा०) तो फिर कहां है

(म०) अबे खबीस ताला खोल और मेरे साथ चल तो दिखला दूं ।

[डा०] पर यार बेईमानी तो न करेगा ![ताला खोलता है]

[म०] खातिर जमा-रख [बाहर निकल] चल मेरे साथ (कुछ सोचकर) पर यार तेरा मालिक तो न — आ जायगा ?

[डा०] आज का वक्त तो आया हो चुका कल इसी-वक्त फिर आवेगा चलो जल्दी निकल चलें

[दोनों का जाना]

[ताला खुला पाकर तारा मोहनी का निकल आ-ना—डाकू सरदार का आकर हैरत करना-]

(सीन तीसरा खत्म)



(अंक २ रा परदा ४ था)

स्थान शिकार गाह जंगल

(तारा मोहिनी का शक्ल बदले वलिवास फकीरी आना)

खुदा ये तूने कैसे २ अजल में हमको.
फसा दिया है ।
नहीं है खबर हमारा कोई नजारा कैसा दिखा.
दिया है ॥
कहां वो शाही तख्त दौलत कहां फकीरी,
तेरी बदोलत ।
नजर न आवे कहीं ठिकाना मुफलिस हमको
बना दिया है ॥
करिश्मे क्या २ दिखाये तूने थे जो अपने हुए-
कमीने खू के प्यासे हुवे सभी है
कह २ वरपा करा दिया है
थे करने वाले मेरी पामाली फकत तुही था-
वहां भी वाली मौत के मूंसे रिहा किया,
फिर अजलमें हमको फंसादिया है ।
खुदा ये तूने कैसे २ अजल में,
हमको फसा दिया है । [गाते चले जाना]

[गुलेनार का वतलाश शिकार आना और गानेपर आशिक होना]

(गु०) जनरल जरा देखो तो कैसा दर्दनाक गाना कौन
गाता है ?

[ज०] जो हुक्म-[जाकर वापस] हुजूर दो जनाना फकीर गा रही हैं ।

[गु०] जनाना और फकीरी लिबास अच्छा उन्हे यहां बुला लाओ

[ज०] बहुत बेहेतर [जाओरी औरतोंके हमारा दाखिलहोना] हाजिर

[गु०] [देख कर] ये फकीरि लिबास नूरानी रुख-तुम्हारा यहां गुजर क्यों कर हुआ वतन कहां है फकीरी किस लिये इख्तियार की ?

[ता०] बानू न पूछो २ अजीज थोगी हुये गरदिश से बेदारी हुये न कहा वतन न कोई हमारा है बस सिर्फ ईश्वर का सहारा है

[गु०] अच्छा आप हिन्दू है बेखुश दया इस गरीब के गरीब खाने को रौनक बख्शेंगी-

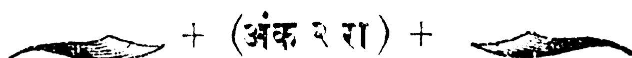
(ता०) जी हुजूर आपने हम लोगों पर करम फरमाया है तो हम लोग हुजूर की कदम बोसी में दिलो जान से खुश हैं ।

(गु०) बेहेतर है तशरीफले चलें वहीं चल कर बातें होगी

(सब जाती है)—

(सीन ४ था खतम)





+ (अंक २ रा) +

(परदा ५ वां) स्थान–(गुलेनार के महल का दरवाजा)

[मोहिनी वो तारा का बातचीत करना]

(ता०) प्यारी जिस बला से नजात पाने में इतनी तक-लीफे बरदाश्त की वही फिर सामने नजर आई

(मो०) सच कहती हो बहन तकदीर के शैतान की अज व रफ्तार है—

(ता०) न घबराओ मगर प्यारी यहां पर तलवार की धार पर चलना है ! ऐसा न हो शक हो जाये और हम पहेचान ली जावें इसलिये बहुत खबर दारी से चलना होगा—

(मो०) बेशक २ तुम खातिर जमा रखो ! मेरी तरफ से कोई ऐसी गलती न होगी ।

(ता०) बस ऐसा ही चाहिये और हम लोगों को अपने नाम भी बदल देना चाहिये आज से तुम्हारा नाम खुशनसीब वो मेरा सोसन याद रखना

(मो०) बहुत खूब मगर तू भी तो जासूसों की चाची बनगई चहरे इस कदर बदल दिये कि अगर खुद बाल देन भी देखे तो खाक भी न पहचाने !

(ता०) बस अब चुप रहो कोई आरहा है [गुलेनार का आना]

[गु०] क्यों जी तुम लोग सहेली तो बनगई, पर गुमनाम क्या नाम से वाकिफ न करोगी ?

(तारा) यानू नामतो सिर्फ उस पैदा करने वाले का है लेकिन हमारी सहेली को खुश नसीब व इस जिस्म को लोग सोसन कहा करते हैं।

(गुल०) बेखुश-क्या ही प्यारा नाम है खुशनसीब आफरीं मेरी भी खुश किसमती है कि ऐसी दिलखुश सहेलियां पाईं।

(तारा) यह आप क्या फरमाने लगीं ? यों कहिये कि हमारी खुश किसमती है जो हुजूर ने हम लोगों को खिदमत में कुबूल किया वरना कहां सरका ताज और कहां पैर की फटी हुई जूती !

॥ शैर ॥

उम्मीद न थी कांच की हाथ गौहर आगया ।
जुगनू की न थी रोशनी भी चांद नजर आगया ।

(गुल०) तारीफ रहने दो चलो अंदर चलें। (सब का जाना) ॥



अंक २ रा परदा ६ ठा

स्थान (महल का वाहरी हिस्सा सडक)

(गुलेनार खिडकी में वैठी है शाहजादा का मोहिनीकी तलाश में आहोजारो करते हुए आना।)

(शा०) हाय प्यारी मोहिनी तू कहां गई! कौन लेगया !! क्या मुझ से रूठ गई ? मैंने तेरे साथ कोई वे अदबी नहीं को कि जिससे तू खफा होगई !! (ऊपर देख-कर) अय शोख तू मुझे छोड यहां क्यों भाग आई मोहिनी तू बडी वे मुहब्बत निकली !

(गुल०) इसने मेरा दिल ले लिया मगर मालूम होता है मो-हिनी के दामें उल्फत में गिरफ्तार मालुम होता है।

(सहे०) वजा है-वह उसी का दम भरता है तलाश करता फिरता है।

(गुल०) मैं मोहिनी वनती हू इसे फसाती हूं और यहां लाती हूं !

(शाह०) मोहिनी ! मुझे दिक न करो साथ न छोडो य-हां आओ मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं।

(गुल०) आई प्यारे मेरे लिये इतनी तकलीफ की [आकर] कुसूर हुआ, माफ कीजिये, वंदी हाजिर है महल में तशरीफ ले चले आराम करें (जाती हैं सोसन का आना)।

(सो०) ये खुश इस गोहर को कहां पाया ?

(शाह०) [साइडमें] हैं २ ! यह आवाज मेरी सुनी हुईहै !!
[गुल०] चुप २ इनकी खिदमत तुम दोनों के सुपुर्द करती हुं किसी तरह की तकलीफ न होने पावे·खुश नसीब कहां है ?
(सो०) आरही है [सहेलियों का गाना]

॥ गाना ॥

क्या ही मजा हो वस्ल में दिल बेकरार हो ।
शोशे में भरा मय हो पहलू में यार हो !!
लबों रुखसारों के अबरू और गालोंके बोसे,
हजार बार में क्याहो बहार हो ॥
काकुल की बलें नागसी दिलयार फांस के,
वस्ले चमन खां में मौसम वहार हो । (क्याही)
तीरे नजर से यार के कलेजे को पार कर ।
बिसमिल बना के यार पे खुद भी निसार हो ।
चश्म रुखेसार सरापा भी हो जोबन भी ।
गुल हो चमन में हिता हो अंगूर हो अनार हो ॥
सरपस्त गुलेनार बेगम को खुशबुए यार मुबारक हो २ ।
(आहिस्ता २ परदे का गिरना)

(परदा ६ ठा खतम)

अंक २ रा तमाम शुद

(अंक ३ रा परदा १ ला-स्थान-दरबार हाल)

(शाह हिन्द मय मुसाहबों के आकर तख्त नशीं होना)

गाना रामिशगरां

मैं तो जाऊं समरिया पैवारना वारना-वारना.
प्यारी मुरतिया भोली सूरतिया मधुर बिसुरिया को पारना । मैं०

दोहा-

पीतम दूर बिदेश हैं दरशन तरसें नैन
पीतम के संग दिन रहे हमें सदा हैं रैन ॥
कहा करूं कासे कहूं कहां जाऊं कैसे मिलूं ।
पीर बढत लागे वारना ३ ॥ मैं तो०
कागा नैन निकासदूं पिया पास ले जाय ।
पहले दरस दिखाय के पाछे लीजो खाय ॥
काली अन्धेरी अकेली सजन बिन ।
हियरा धराजाये हारना ३ ॥ मैं तो०

(रामिशगरां का गाते हुए जाना कासिद का आना)

(का०) शाह शाह हिन्द इकबालो बुलंद
(शा०) क्यों कासिद शाहजादे की खबर लाया—
(का०) खाकसार शाहजादे की तलाश में सिम्त मगरिब कानपुर, पटना, इलाहाबाद, कलकत्ता, बंगाल. सफर करता हुआ। दखिन मुड़ा चकरधरपुर बिलासपुर नागपुर चांदा रामेश्वर होता हुआ

पश्चिम में समुद्री सफर करता, जरमनी इटली सैबेरिया आस्ट्रिया यूनान विलायत में कोना २ तलाश किया मगर शाहजादे का पता न पाया, लिहाजा हिन्द को वापस हुआ तो इलाका वसरा में पता मालूम हुआ शाहजादी गुलेनार के अपने दामे उल्फत में फसा रखा है शाहजादे को हरचंद समझाने पर भी उन के ख्याले शरीफ में खाक भी न आया आखीर बैरंग वापस आया अगर लाने को जल्द कारखाई न की जावेगी तो शाहजादे को जिन्दगी दुश्वार होगी-

(बा०) क्या कहा शाहजादे को वसरे में कैदकर लिया है ?

(का०) जी सरकार खुदा बंदा—

(शा०) उसकी इतनी मजाल जेर सल्तनत होते हुए अंजाम का होफ नहीं गजब सितम सब्र नहीं होता ओह वसरे की शूबात तो बरबाद कर किले को ईट से ईट न बजादूं तबतक आराम न लूंगा सिपह-सालार फौज तयार कर अभी वसरे को कूंच करो मेरी सवारी का इन्तजाम करो !

(का०) इकबालो बुलंद गरीब परवर !

(शा०) दरबार बरखास्त !

(अर०) मुसाहबान हाजिरे मिल दरबार ब हुकम दरबार बरखास्त गरीब परवर नजर दौलत शाहंशाह हिन्द दामयक बालहु इकबालहू बुलंद !

(शाह को जाना)

सीन पहला खतम

(अंक ३ रा परदा २ रा नकल)

॥ स्थान गुलचमन का कमरा ॥

[गु०] (गाना)

कोई लावो पियाकी खबरियां,
मेरे बालम की सूनी सेजरियां। कोई०
पिय बिन निस दिन जिया तरसत है।
दरसन लोभी अखियां रे कासों कहूं।
कित जाऊं मोरि गुइयां कैसे मिलेगी खबरियां। को०

(दोहा) कागा पतिया लिख दऊं पिया पास ले जाय।
विरह विथा को जायके उनको देय बताय ॥
आवत २ कह गये रहे विदेस न छाय।
जनम २ दासी रहूं जो पिय देय मिलाय ॥ कोई०

(शेर) सितम है हैफ है उफ है आहो जारी है ॥
दिल तो बेकरार मेरे यार की इन्तजारी है ॥ को०
या खुदा प्यारे की इन्तजारी ने दिल बेकरार कर दिया सब्र करूं भी तो कहांतक एक नहीं २ दिन नहीं पूरे दो हफ्ते हो चुके अबतक शक्ल न दिखलाई सब्र का भी दिवाला निकाल दिया नहीं मालूम खफा हुआ रूस गया ऊंघ गया या सांप सूंघ गया कहां गया कुछ पता भी नहीं, उह अल्ला! मुहब्बत कार हुई या कोई नई गुलदम पयदा होगई! अरे

हो मुहब्बते थे दाग आजा प्यारे दिल विराग।

(दि०) क्यों प्यारी किसे बुला रही हो ऐसी चुलबला रही हो ?

(गुल०) चलो हटो भी जले पर नमक लगाने आये भला ऐसा भी दगा राह ताकते आंखे पथरा गई दिल मेरा फेरदो !

(दि०) माफ करो प्यारी मैं तो कदम बोसी में आ रहा था रास्ते में तेरा शौहर मिला आवारा तो मिलने का न रहा चारा इस लिये हो गया नौ दो ग्यारह जब वह यहां से दफान हुआ तो यारों का गुजर हुआ कहो कैसी कहा ?

(तुरेखांका छिपे हुए खड़े होना)

(तुर०) साइडसे-कहो यारों मेरी पाक दामन बीबी को देखा ? कैसी असमत बचा रही है अपने यार से गाली दिला रही है ? खुदा की शान०

(गुल०) प्यारे मारो गोली अवारा दिन भर घूमा करता है इस से मैं बेजार होगई न कहीं कमाने जाता है न कहीं घूमने जाता है दिन भर मुरगे की तरह दड़वे में पड़ा रहता है ?

(दि०) प्यारी इसे कहीं दफान करदो न !

(दि०) अजी कई मरतबा झटका कहा मुए को सात पुश्तों को बकराई मगर नौकरी पर आंही नहीं गया सो नहींगया आज घरमें अनाज नीं पकाऊं तो क्या उसका कलेजा !

(तु०) (साइड में) देखो हराम जादी गाली देरही है मैं नोकरी पर जाउं और यह यारों के साथ गुल छुर्रे उडाये और सूना पाकर घरका सामानले चंपत हो और मींया मोची ही रह जायें ठहरतो जा ?

(गुल०) मेरी जान अब इस कदर न सताओ इन्तजार करते करते सब्र जाता रहा !

(दि०) प्यारी मैं क्या करू ? तेरे शोहर से तो मैं भी आ-जिज आगया मैं आता हूं तो उस हराम जादे को मकान हां पर पाता हूं तो दिल मसोस कर भाग जाता हूं ।

(गुल०) इस मुए से छुटकारा ही नहीं होता प्यारे चलो यहांसे भग चलें अच्छा प्यारी फिलहाल मैं जाता हूं कल आउंगा तैयार रहना (जाता है सामने से तुर्रे खां आता है और सलावालेकुं कहता है।

(दि०) वालेकुं सलाम ? (देखकर) अरर ! (कांपता है)।

(तु०) (हाथ थाम कर) क्यों बे मेरी गैर हाजरी में म-कान में क्या करने आया था ?

(दि०) मैं ? मै ? आप ही से तो मिलने आया था ?

(मगर मेरे से मिलने आया था या मेरी जोरू से ?

(दि०) नहीं २ आपसे आपके न मिलने से वापस जा रहा था ।

(तु०) हां ! बेटा वापिस जा रहा था या जोरू का प्यार ले रहा था ?

(दि०) अरर ! मुहब्बत में पन्चर होगया अजी क्या बकते हो किसी भले आदमी को बदनाम करते हो ?

(तु०) अरे भले आदमी के बच्चे ! मेरी आंखोंमें धूल डालना चाहता है ? नालायक ! (मारता है दिल चिराग तुर्रखां को मारता है और खुद जोरसे चिल्लाता है)

(दि०) अरे ! दौड़ो मुझे मारडाला ! हाय !! मरा खून हुआ !!!

(गुल०) [आकर] अरे क्या है ? [दिल के साथ अपने शोहर को मारती है] अरे बस करो ! क्यों बेचारे को मारे डालते हो ?

(तु०) कमबख्तों तुम दोनों ने तो मुझे धोबी का गदहा समझा है !

(गुल०) हाय ! हाय ! मींया तुमनेतो गजब ही कर डाला विचारे की पसलियां तो तोड डाली कहीं ऐसा भी पीटा जाता है ?

(दि०) (रोता है) हायरे ! मर गया कमबख्तों तुम्हें दो जखमें भी जगह न मिले ।

(गुल०) वाह मीयां तुमने तो गजबही कर डालो बडे खराब हो ।

(तु०) अरे खराब की जोरू निकल यहां से बदमानों ने कचूमर करदिया !

(दि०) अरे मीयां क्यों झूठ बोलते हो खुद मारते हो और इलजाम गेरों पर ! [रोताहै]

(तु०) अबे हरामीपिल्ले गुस्सा दिलाता है। ले ! (मारता है)।

(गुल०) अरर! खुदा के लिये छोडो क्या मारही डालोगे ?

(गुलचमन एक तरफ से दिलचिराग दूसरी तरफ से तुर्रेखां को मारते है धमा चोकडी होता है)

(परदा गिरता है)

परदा २ रा खत्म



[अंक ३ रा] [स्थान नजर बाग]

[गुलेनार का दाखिल होना] (सहेलियों का अरज करना)

(स०१) कहिये बानू कल कैसी रात निकली पहचाना तो नहीं ?

(गुल०) नहीं जी मुझे तो वह अब तक मोहिनी ही समझ रहे हैं मगर ! सवाल ऐसे ये हिसाब कर रहे हैं कि मुझसे जवाब खाक नहीं देना होता ?

(स०२) तबतो उनको जरूर शक हुआ होगा !

(गुल०) हां कुछ कचापन तो नजर आया मेरे ख्याल से कुछ शक जरूर ही हो गया मगर क्या करती खुदा खैर करे !

(स०३) अजी कोई भी फिकर सुना दिया होता तुमतो खुद होशियार हो !

(गुल०) यों तो मैंने कई बाते कहीं मगर उनके सवाल के जवाबमें कहीं उलटा न पड जाय इसी लिये टाल दिया।

(स०१) सवाल क्या थे जरा हम लोग भी तो सुने ?

(गुल०) अरे ! क्या कहूं ! नोमबहशाना सवालात हैं समझ में नहीं आते, कहते हैं मोहिनी तुम जंगल से मुझे छोड कर क्यों भाग आई चंडूल किधर गया यहां कैसे पहुंची ! वगैर २ वाही तबा ही बकते हैं क्या

जवाब दूं बेचारी मोहिनी तो खुदा मन को रवाना हो चुकी खुदा जाने ये कबकी बाते यह कर रहे हैं इसी फिक्र में परेशान हू क्या जवाबदूं मेरे जवाब न पाने से शक बढताही जारहाहै क्या करू ? कुछ समझमें नहीं आता !

(स०) अजी शक होने का सबब और भी कोई दूसरा है ? आपकी वह दोनों नई सहेलियां शाहजादे से गुल गुल कर बाते करती हैं मेरा शक उन पर भी होता है !

(गुल०) बेशक तू सच कहती है हराम जादियां बरगला रही हैं उन्हे जाकर समझती हूं !

(स०) खैर ये तो हुआ करेगा मगर अभी तक वस्ल भी हासिल हुआ ।

(गुल०) अजी वस्ल क्या कयामत बरपा हुई कहते हैं ? मैं राजपूत हूं बगेर शादी इल्तजा बेकार है ।

(स०) किसी तरह दामें उल्फत में गिरफतार करो ।

(गुल०) बस! करना फिजूल है चलो समय हो गया शाहजादा आता होगा ।

(सबका जाना)

(परदा ३ रा खतम)



(अंक ३ रा परदा ४ था)

स्थान जनाना महल

(शाहजादा पलंगसे उठता है सोसन खुशनसीब बैठी है)

(शा०) गुलशनका जो गुल था खोगया बाकीरहा अबतूर है
चश्मों में बितांई कहां काफूर जिसका नूर है॥
मोहर जो पायी था गैबसे हाय ओ जाता रहा।
माशूक पहलू में जोथा हाथसे जाता रहा॥
हाय ! अफसोस मोहिनी तू किधर गई ?

(खु०) हुजूर ऐसी आहोजारी किस लिये ? बेकरारी किसलिये ?

(शा०) कुछलो नहीं, दिल का रोशनदान था मेरा अरमान था पाया और हाथसे खोदिया अब क्या कुछ भी तो नहीं।

(खु०) नहीं नहीं जनाब, बोलिये दिलको गांठ खोलिये हम लोगों के लायक हम लोग भी जी जान से मदद में हाजिर हैं।

(शा०) यह तुम जानती हो कि यह जो मोहिनी अपने को बतलाती है क्या वाकई में मोहिनी है मुझे तो शक है यह मोहिनी नहीं बल्के कोई दूसरी होह

(खु०) आप का खयाल बहुत दुरुस्तहै ये असली मोहिनी नहीं है यह मोहिनी की बड़ी बहन गुलेनार है।

(तारा) जनाब (शैर) कहां तो सर और कहां पैरों का पैजार कहां चांद मोहिनी कहां शोख गुलेनार

(शा०) बेशक यह गुलेनार ही है क्यों कि इसने मेरे सवालों का जवाब अब तक नहीं दिया ।

(खु०) जी हां ये गुलेनार चमन का खारहै !

(शा०) बेशक आवाज में फर्क चाल में फर्क आदत में फर्क नजर आता है ।

(खु०) जनाब खामोश हो जाइये कोई आरहा है

(गुलेनार का आना)

(गुले०) फरमाइये मिजाज कैसा है ?

(शा०) अच्छा है ! जो कुछ होरहा सो भी अच्छा है

(गुले०) मेरे सरताज आप गमगीन क्यों रहा करते हैं

(पलंग पर बैठना चाहती है)

(शा०) [उठकर] यह क्या बदतमीजी-इतना जुनू का जोश है होष फरामोश है मैंने जो कहा था क्या भूल गई याद क्यों हुई जाती हो जोश जुनू में बरबाद !

(गुले०) अजी आप इतने चौकन्ने क्यों होरहे हैं ।

[गुलेनार के देखने ही सबका जाना]

मेरे सरवर दिल लेकर इस कदर तकलीफ देना बेवफाई करना क्या आपको जेबा है चोचले रहने दो वस्ले जमा पियो पिलाओ मजा उठाओ—

(शा०) बस खबरदार फिरसे ऐसी तकरार जबां परलाना

वरना अच्छा न होगा।

(गुले०) जनाब मोहिनी पर तो निसार हो फिर चोचले क्यों कर रहे हो ?

(शा०) चुप बद तमीज ऐसे पाक नामको इस नापाक ज़बां से निकाल कर नापाक न बना तू कहां राहकी गाम जनी और कहां वह हयाकी देवी मोहिनी

(नसर) हरगिज नहीं है मोहिनी में जैसी खसलत तुझ में है
द मन रिआजी उसमें है असमत फरोशी तुझ में है ॥
वह चमन का नूर है और तू एक खार है।
नूरे खुदा रहमत है वह तुझ पर खुदा की मार है ॥
तू है टुकड़ा कांच का वह नायाब गोहर है।
दो जख का शैतान तू वह बिहिश्ती ओहर है ॥
कहां तू अंधेरी मावस की कहां पूनों की चांदनी।
शैतान कहां तू स्याह कार कहां महाताब रोशन मोहिनी

(गुले०) क्यों ये गुस्ताखाना जवाब—ऐ मगरूर हस्ती ये जानता है कि तू गुस्ताखी कर रहा है ?

(शा०) हां जानता हूं मैं एक दुनिया की बदकार और नसे बात कर रहा हूं :

(गुले०) अब नादान अपनी ज़बांको रोक मैंने तुझे एक शौकीन समझ दिल दिया था समझ रख औरत जब प्यार करती है तो जन्नतसे भी बढ़ कर है। इश्क में मुबतिला हो जाती है। और जब बरक हो जाता है तो शेरनी से भी बदतर खूंखार

होती हैं तुमने एक शेरनीं पर पार किया है। याद रख और अंजाम सोचले उन दोनों हराम जादियों पर भी शक है शायद उन्होंने तुझे कर गलाया है उन्हीं का तुझ पर शाया है ?

(शा०) चुप नाचकार उन बेचारियों ने तेरा क्या बिगाड़ा है उनकी शान में अगर तेरी नापाक जबान से एक लफ्ज भी यह निकाला तो याद रखना लफ्ज बाहर निकाने के पेशतर तेरे जिस्म पर सर न होगा।

(गुले०) अय खुदा के कहर ! मैं कौन हूं सुन और समझ ?

(नसर)

मैं वो शैतान हूं जो लाहोल पढ़ादे।
मैं वो बिजली हूं जो जमी दस्त करदे॥
मैं वो सांप हूं जो डसते ही सुलादे।
मैं वो कहर हूं जो बादशाहोंनेही रूलादे॥
मैं वो मौतहूं जो रूहका फूरर करदे।
मैं वो भवर हूं जो चमन चूर करदे॥
मैं वो आफत हूं जो तोबा कहलादे।
मैं वो आग हूं जो लहजे में जलादे॥



(शा०) खामोश ज्यादा न बक हटजा मेरे सामनेसे मारी-जायगी बद खसलती का मजापायगी—

सुन ए मौत के निवाले सुन तुझको अहुन्नुम गर्मीद न करदू तो सही इस हस्तिये मगरूर को दरगोर न करदू तो सही (जाती है)

दुनियां को उगालजा जो दिलमें आवे कर गुजर (जाता है)

(परदा ४ था खतम)



(अंक ३ रा परदा ५ वां)

स्थान फौजी केम्प]

गुलेनार का पेश होना — (अन्दर आवाज होना पटाखा—गुलेनार आकर)

(गुल०) जंग छिड गई हमारे बहादुर सिपाइयों ने जी तोड कर जंग किया मगर हाय हमारे तकदीर में शिकस्त ही रही, मुझे ताज्जुब है कि जंग छिडते ही मेरी फौज पर इस मगरूर के फौजी जवानों ने न मालुम किधर से आकर इकदम हरा दिया और मुझे शिकस्त दी मैं नहीं समझती कि इस जवान ने यहां बैठे ही बैठे क्यों कर फौज को इत्तला पहुचाई जो ऐन वक्त पर काम आई अब तो मेरे भी बचने का चारा नहीं किसी की मदद का इशारा नहीं

॥ शेर ॥

जो दुनियांका काल था मिश्ल मौत था बुलंदी पर
जो शोला आतिश का था कहर था जमी पर ॥
आज वो कम नसीबी से शिकस्तों में आगया।
फन्दा गलेका मोहिनी का मेरे गले मे आगया ॥

(खु०) बानू अब क्यों गमगीन होती हो शेर दिल होकर
क्यों बुज़दिल होती हो जोशेजुनु में होशाते होतीहैं

(शेर०) या हो कयामत तक पहलू में रहना यारका।
जिल्लत मुसीबत कहर हर हो या खुदा की मारका॥

अब क्यों घबराती हो दिलगीर होती हो याद
रक्खो खुनाके [illegible] में भी [illegible] होती नहीं

(शेर) जुल्म जुल्मीका जो है अन्जामसो अब देखले।
क्याही सौदा नकद है इस हाथदे उस हाथले॥

(गुल०) खुश नसीब २ इस वक्त खुदाने तुझे ताने कसी का वक्त दिया है। फिरभी तू मुझपर क्यों कहर बरपा करती है जले को जलाती है।

(शेर) ख्वाबमें सोचा न था कि तकदीर मेरा सो गया
बाकी रहा कहर कज़ा बस होना था सो होगया॥

(बादशाह हिन्द का दाखिल होना)

(बाद०) पकड़लो जकड़लो यही है आलिम खुदा का गुनहगार।

(सिपाही गिरफतार करलेते हैं)

क्यों बे मगरूर हस्ती अबतो हुई हिम्मत पस्त। बोल २ अय दुनियां के बवाल बोल शाहज़ादे का दामें मुहब्बतमें फांसो तकलीफ देना यहां तक कि उसके कत्ल का इन्तज़ाम करना सितम ! तुफ है

तेरी करतूमपर, तख्तपर, ताजपर, तुझपर, तेरी ज़ात पर और तेरे इस नूरपर

(गु०) जाशेजुनु का जोश था करदे उस को दर गुज़र
फैद में गुलनार है जो करना होसो कर गुज़र

[ब०] नहीं२ गुलेनार मैं इन्सान हूं मेरे जिस्ममें सीना सीनेमें दिल दिलमें खुदा का ख्याल है जो तू चाहे वह मैं कर नहीं सकता यहां इन्साफ है जुल्म हो नहीं सकता

ख०(शेर) फरजंद मिस्ले शेर है रोशन है राहे रास्त था
जोशेजुनां तुझमें जालिम जुल्म कहर ज्यास्त था
हाजिर खुदा हरजा रहे शैतान का चलता नहीं
दर गुज़र इससे जो हो चली कोई हमरो नहीं

अय जल्लादो-कत्ल करदो अय इसे धड़से भी गरदन तोड़दो
फैसला इसका जो है बस मोहिनी पर छोड़ दो।

(मोहिनीका दाखिल होकर)

(गुले.) मोहिनी तू जिन्दा है अय खुदा २ मैं क्या देख रहा हूं

(मोह. वही जो खुदा को दिखाना मंजूर था देख वहा मोहिनी तेरे सामने है। (बादशाह से) अय मेरे आका

शेर- जोशे मुहब्बत से मेरा सीना हुआ सरशार है।
(बाद०) बस तुझी पर छोड़ता हूं अय तुझे अख्तियार है।
बस हमशीर मेरे सर पे हो दुशमनी का तोड़ दो
राहे खुदा इस ताज पर मेरा कहन को छोड़ दो।

गुलेनार-नहीं मुझे रहम दरकार नहीं शेर भी एक गीदड़से जांबख्शीकी जुस्तजू नहीं करता

शेर- वाते नहीं हैं मौतसे औ दिलेरी शेर है.
अच्छा बुरा होता सो भी किस्मतों के फेर हैं।
जान जाने में न हरगिज यह गुलनारडरता है.
देखले इस तरह पर पाता नजात हस्ती है।

[पेश कब्ज निकाल सीना चाक कर गिर जाती है और चन्द सांसे लेकर दम तोड़ देती है सब लोग हैरतसे अफसोस करते हैं परदा गिरता है।

(सीन ५वां खतम)



अंक ३ (परदा ६) स्थान दरबार ताजपोशी.

(शाहंशा) मेरे वफादार बहादुरों तुम लोगोंकी वो बाशिंदगान बसरा की मदद से मैंने इस सल्तनत पर काफी फतहपाई है और इसी बाइस मेरे ख्याल से इसका अंजाम भी तुम लोगों के रोबरू खातिर ख्वाह यहां का हक्कदार को मिलना जरूरी अम्र है लिहाजा मेरे ख्याल में मोहिनी के सिवा और कोई इस सल्तनत का हक्कदार नजर नहीं आता इसलिये ये ताज (हाथमें लेकर)

(सब स.) हुजूर के हां दस्त मुबारक से हकदार का ताज पोशी हो.

(शा हि.) बहुत खूब मैं ब खुशी अञ्जाम देता हूं (ताज पहनाता है)

(सब.) खुदा हम लोगों की सर परस्त हमारी मलिका को सदर ताज सलामत रक्खे।

(शा हि.) आमीन

(सब.) आमीन ॥ आमीन ॥ ३ ॥

(मो.) अब मेरे तकदीर के खुदा मेरे बुजुर्ग बादशाह सलामत और मेरे आकाके जां निसार मुसाहबों आप लोगों ने हक्क ताज हकदार को बख्शा मगर जो इसको असली हकदार होना चाहिये वह पोशीदा हो रहा है आज आप लोगों के सामने उस हमारे सरताजको मैं ताज परस्ती करूंगी. लिहाजा ये ताज हमारे आका शाहजादे ये हिंद केसर पर

जीनत बख्शे ।

(सब) आमीन आमीन—

(ता.) इस जल्सये ताजपोशी की मुबारक बादीमें में बिखरे हुये दो दिलोंको एक हो जाने के लिये शाहंशाह से दरखास्त करती हूं ।

(शा हिं.) बहुत खूब क्या तारा की दरखास्त तुम दोनोंको मंजूर है—

(दोनों) कबूल वो मंजूर है—

(शा हिं.) काजीजी को बुलाओ.

(सि) जो हुक्म हजूर (जाना वो काजी के साथ वापस आना)

(का.) क्या है. कहिये शादी मंजूर है. तो उन्हे सामने लाओ

(शा.) ये हाजिर है. (दोनों को सामने खडे कर देता है)

(का.) हाथ मिलाकर—

तरक्की के जमाने में जोरू से मियां बेजार रहे ।
मुर्गी के उल्फत में मुर्गा ताहश्र गिरफ्तार रहे ॥

(सब) आमीन १ आमीन २ आमीन ३

(ब. स.) खुदा हमारे सरताज फरिश्ते खुदाको सलामत रक्खे ।

चन्द्रकला का दाखिल होना ।

(चन्द्र.) हम खुदा के दरबार में बन्दी भी कुछ दरखास्त करती है.

(शा.) तुम कौन हो बेटी और क्या चाहती हो.

(चन्द्र.) एक बागियों की सताई हुई कम नसीब औरत को

नकशेर का फैसला ।

(बाद.) क्या दरख्वास्त जिस बातका फैसला.

(चन्द्र.) आप लोग है और शहर रिवाज हिन्द में जब कि मेंहदी जाती है और कंकण बांध दिया जाता है. रसमों से शादी होती है जिसका कंकन बांधा जाता है ।

(बाद.) बेशक--

(चन्द्र.) अगर ऐसी हालत में दुलहा दुलहिन को छोड़कर भाग जाय तो-

(बाद.) तो दुलहन को चाहिये अपने अजीजों से उसकी तलाश करावे.

(चन्द्र.) अगर खुश किस्मती से दुलहन दुलहा को पा जाय ।

(मोहिनी) तो वो उससे (दोनों हाथ मिलाकर) इस तरह बदला ले,

बिछड़ा हुवा जोड़ा फिरसे मिलाया खुदाने

अव्वल हक आपको दिलाया है खुदाने

(सब) आमीन १ आमीन २ आमीन ३

(सब और सलतन) ये जलसा आज शाहाना (सब) मुबारक हो २

ये तख्तो ताजअफसाना (सब) मुबारक हो २

ये मजमो ताजपोशी का अखाड़ा इन्द्रका हरदम

साकीयत वो पैमाना (सब) मुबारक हो २

शाही जलजले इमपर हो हमेशा या खुदा

सारे माहरू दोनों (सब) मुबारक हो २

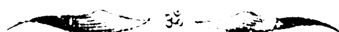


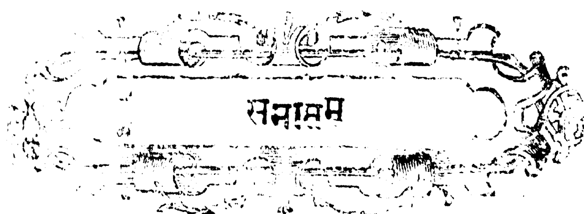
गाना सबका) मुरली बजाने वाले भारत में फिरसे आजा
मुरलीकी तान यकता फिरसे जरा सुनाजा
फिरके हुये हैं लाखों धर्मों के अब जहां पर
कृष्णवतार आ फिर मोहन का सुर सुनाजा
हम सब तेरे हैं बंदे रहमत नजर तेरी हो
सबका तुही है वाली दर्शन जरा दिखाजा
मुरली बजाने वाले भारत में फिरसे आजा



परदे का आहिस्ते २ गिरना (तमाम शुद)

लेखक
पं० भट उपेन्द्रनाथ गद्दीकर सागर हाल कांकरोली





श्री महेश प्रिंटिंग प्रेस नाथद्वारा (मेवाड़)

इस पुस्तक के मिलने का पता—



पो० उपेन्द्रनाथ शर्मा राहीकर

कांकरोली (मेवाड).

श्री "महेश-मुद्रण-यन्त्रालय" नाथद्वारा.

४

इस पुस्तक के मिलने का पता—



पो० उपेन्द्रनाथ शर्मा राहीकर

कांकरोली (मेवाड़).

श्री "महेश-मुद्रण-यन्त्रालय" नाथद्वारा.